दी नेहु जर्नल, वर्ष : ५, संख्या : १ व २, २००७

तुलनात्मक अध्ययन और असमिया - हिन्दी रामकाव्य

डॉ. दिनेश कुमार चौबे

भारतवर्ष न केवल एक बहुभाषी देश है, बल्कि अनेक संस्कृतियों की संगम-स्थली भी है । बहुलता में एकता इसका लक्षण और आकर्षण की शक्ति है । देश की आत्मा को समझने के लिए प्रान्तीय साहित्य का अध्ययन आवश्यक है जिसका व्यावहारिक पहलू है -- तुलनात्मक अध्ययन। जब हम किसी वस्तु या विषय के गुण-दोष-विवेचन में प्रवृत्त होते हैं तो उस समय तुलना ही हमारा साथ देती है । सामान्य जीवन में तुलनात्मक पद्धति हमारी रुचि का परिष्कार करती है। साहित्य के क्षेत्र में यह एक प्रमुख आवश्यकता है । साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन आधुनिक साहित्य-चिन्तन की एक नवीन संकल्पना है। यह केवल अध्ययन की एक विधि है या साहित्य की एक स्वतंत्र अवधारणा - इस विषय में विद्वानों में मतभेद है । वस्तुतः यह एक प्रकार का साहित्यिक अध्ययन है जो अनेक भाषाओं के साहित्य को आधार मानकर चलता है और उसका उद्देश्य होता है - अनेकता में एकता का अन्वेषण । विभिन्न भाषाओं के साहित्यों के पारस्परिक प्रभाव का मूल्यांकन तुलनात्मक अध्ययन का महत्त्वपूर्ण अंग है । वास्तव में अपने देश का वास्तविक चित्र देखने के लिए मात्र प्रादेशिक अध्ययन पर्याप्त नहीं है, विस्तृत ऐतिहासिक और तुलनात्मक अध्ययन आवश्यक है । आज देश में भावात्मक एकता पर अधिक बल दिया जा रहा है । इसके लिए आवश्यक है कि हम देश के हर प्रान्तीय साहित्य एवं संस्कृति से परिचित होकर आपसी सद्भावना को सुदृढ़ बनायें ।

भारतीय भाषाओं के पारस्परिक सम्बन्धों को प्रमाणित करने वाले विभिन्न माध्यमों में भारतीय साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन को आज विशेष रूप से प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है । इससे हम अन्य भारतीय साहित्य के साथ संवाद बनाये रखते हुए 'भारतीय साहित्य एक है' इस संकल्पना को साकार कर सकेंगे । सभी भारतीय भाषाएँ माँ भारती की कोख से जन्मी हैं अतएव सभी भगिनी भाषाएं हैं और सभी भारतीय संस्कृति की संवाहक हैं । बहुत पहले राष्ट्रकवि सुब्रहमण्यम स्वामी ने अपने गीत में यह व्यक्त किया था-- 'भारत माता भले ही अठारह भाषाएं बोलती हो किन्तु उसकी चिन्तन-प्रक्रिया एक ही है ।'

तुलनात्मक साहित्य का आशय साहित्यों का साम्य-वैषम्य प्रकट करने के विचार से उसकी तुलना मात्र नहीं है । यहाँ आशय मुख्य साहित्य-विशेष को पृष्ठभूमि प्रदान करने वाली सांस्कृतिक प्रवृत्तियों के अनुसंधान द्वारा अपने परिप्रेक्ष्य को व्यापक बनाना और इस तरह साहित्य और मानवीय कार्य-कलाप के अन्य क्षेत्रों के पारस्परिक सम्बन्ध से अवगत होना है । तुलना की प्रवृत्ति के परिणामस्वरूप विश्व साहित्य का परिचय प्राप्त कर जहाँ हमें अपने ज्ञान के विस्तार का अवसर मिलता है, वहीं अखण्ड मानव-वृत्तियों का भी बोध होता है ।

देश में तुलनात्मक अध्ययन अभी तीन-चार दशकों के अन्दर ही आरम्भ हुआ। इसलिए अभी आरम्भिक अवस्था में ही है । देश के विश्वविद्यालयों में आजकल शोध प्रबंध के रूप में

तुलनात्मक अध्ययन की प्रवृत्ति तीव्र गति से बढ़ रही है । इससे भारतीय भाषा साहित्य का अन्तः सम्बन्ध सूत्र दृढ़तर होने की प्रबल संभावना है । इससे हमारी दृष्टि, चिन्तन-प्रणाली और मनोवृत्ति में भी परिवर्तन आ सकता है ।

आज सारे देश में विघटनकारी तत्त्व बढ़ रहे हैं । भाषा, प्रान्त, जाति आदि के भेद के नाम पर देश को खण्डित करने के षड्यंत्र का प्रयास जोरों पर है। इस बात को हम भूलते जा रहें हैं कि राष्ट्रीय अस्मिता नष्ट होने पर राष्ट्र ही नहीं, व्यक्ति भी महत्त्वहीन हो जाता है । राष्ट्र की इस भयानक परिस्थिति से उबरने के लिए तुलनात्मक अध्ययन स्वतः अनिवार्य हो जाता है जिससे उन समान भावों-विचारों में अन्तस्सम्बन्ध स्थापित किया जा सके । हजारी प्रसाद द्विवेदी की उक्ति द्रष्टव्य है 'भारतवर्ष का मध्यकालीन साहित्य वस्तुतः समूचे भारतवर्ष का साहित्य है, प्रान्तवार बँटा हुआ विभिन्न बोलियों का नहीं ।'[१] इस उक्ति के परिप्रेक्ष्य में असमिया और हिन्दी राम साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन दोनों भाषाओं के रामकाव्यों को समग्रता से समझने में सहायक होने के साथ तत्कालीन राष्ट्रीय और सांस्कृतिक चेतना को समझने में उपयोगी है । यहाँ संक्षेप में दोनों भाषाओं में रचित रामकाव्यों का परिचयात्मक विवरण देना अभीष्ट है ।

असमिया रामकाव्य :

असमिया काव्य के जन्मदाता हेम सरस्वती माने जाते हैं जिनके जीवन-वृत्त के बारे में अन्य भक्त कवियों की तरह अधिक जानकारी नहीं मिलती । उनका समय बारहवीं शताब्दी माना जाता है । इनकी दो रचनाएं हैं -- प्रह्लाद चरित और हर-गौरी संवाद । इनके साथ हरिहर विप्र का नाम उल्लेखनीय है । इनकी रचना 'लव कुंशर युद्ध' रामकाव्य परम्परा की महत्त्वपूर्ण कृति है । माधव कंदली को संस्कृतेतर भारतीय भाषाओं में प्रथम रामायण लिखने का श्रेय प्राप्त है । उन्होंने 'पंच काण्ड रामायण' की रचना सन् १४०० ई. के आस-पास की थी । इसमें पाँच काण्ड हैं - अयोध्या, अरण्य, किष्किन्धा, सुन्दर एवं युद्ध काण्ड । वाल्मीकि रामायण पर आधारित 'रामायण' में स्थानीय रीति-नीति एवं संस्कृति का प्रभाव दृष्टिगत होता है । माधव कंदली की 'रामायण' को सप्तकाण्डात्मक रूप देने का कार्य महापुरुष शंकरदेव और माधवदेव ने किया । शंकरदेव द्वारा 'उत्तरकाण्ड' सन् १५५०-६० और माधवदेव द्वारा अदिकाण्ड लगभग इसी समय रचित हुआ । इसके बाद अन्य राम काव्यों में हरिहर विप्र कृत 'लवकुशर युद्ध' है जिसका रचनाकाल १५०० ई. के लगभग माना जाता है । यह कृति जैमिनीय भारत के आधार पर रचित कुल ५९२ पदों की रचना है । इस कृति में पौराणिक कथा और चरित्रों को ग्रामीण वातावरण में सहज-सरल जनसाधारण के अनुरूप ढाल कर विश्ववसनीय रूप में उपस्थित किया गया है ।

असमिया रामकाव्य-रचयिताओं में १६ वीं शताब्दी के अनन्त कंदली का नाम उल्लेखनीय है । इनके द्वारा रचित 'रामायण (१५५२-६०) में तीन काण्ड प्राप्य हैं - अयोध्या, आरण्य और किष्किन्धा । किन्तु तदयुगीन ग्रन्थों में कंदली-रामायण का उल्लेख सप्तकाण्ड के रूप में मिलता है। इस रामायण में राम और कृष्ण में अभेद स्थापित करना एक उद्देश्य है । इस रामायण पर माधव कंदली के रामायण का प्रभाव देखा जा सकता है। दुर्गावर द्वारा रचित 'गीति रामायण' (१५७० ई.) में आदिकाण्ड और अयोध्याकाण्ड नहीं मिलते केवल अरण्यकाण्ड से उत्तर काण्ड (रामाभिषेक) तक की कथा मिलती है । इसका मूल आधार वाल्मीकी रामायण है । अरण्यकाण्ड में कवि की मौलिकता

स्पष्ट होती है । शेष काण्डों में माधव कंदली का प्रभाव परिलक्षित होता है । अनन्त ठाकुर की कृति 'श्रीराम कीर्तन' (१६५५ ई.) में ११०५ पद हैं । इसके प्रारंभिक सात पद मंगलाचरणात्मक हैं । काव्य की रचना कीर्तन नामक काव्य रूप और कीर्तन शैली विशेष में होने के कारण इसका नामकरण श्रीराम कीर्तन हुआ । इसका कथा स्रोत वाल्मीकि रामायण हैं । इसकी विशेषता रचना शैली की सरलता और गेयता है । रघुनाथ महंत की तीन रामकाव्यात्मक रचनाएं हैं- 'शत्रुंजय' (१७३६ ई.) 'अद्भुत रामायण', 'कथारामायण' अपूर्ण (१७८१ ई.)। तीनों कृतियाँ रामकथा विषयक है । कृष्ण भक्त होते हुए भी कवि ने राम विषयक रचनाएँ की है। 'शत्रुंजय' २१३० पदों में रचित एकार्थ काव्य है । मूलकथा पुराणशैली वाल्मीकि और भारद्वाज के संवाद में वर्णित हुई है जिसमें कथावाचक वाल्मीकि और श्रोता भारद्वाज हैं । 'अद्भुत रामायण' में सीता के पाताल प्रवेश की घटना वर्णित हुई है । कथा के अन्त में मार्कण्डेय और युधिष्ठिर वक्ता श्रोता के रूप में स्वीकृत है । कथा रामायण में तीन काण्ड उपलब्ध हैं - आदि, अयोध्या, और अरण्य । उनके मृत्यु के कारण संभवतः कृति अपूर्ण रह गई होगी । इसमें पूरी कथा नारद- वाल्मीकि-संवाद के रूप में रखी गई है । इसका मूल आधार वाल्मीकी रामायण का पूर्वी पाठ और माधव कंदली कृत रामायण है । शिष्ट भट्टाचार्य द्वारा रचित 'किष्किन्धाकाण्ड' (१७८१ ई.) में कुल ग्यारह अध्याय हैं । यह गद्य कृति है । ऐसा प्रतीत होता है कि रघुनाथ महंत की कथा रामायण को पूर्ण करने के लिए यह कृति रचित हुई हो । इसमें इस काण्ड की पूरी कथा वर्णित है । श्री चन्द्रभारती कृत 'महिरावण वध' (अठारहवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध) २२९ छन्दों की रचना है । इस कृति का दूसरा नाम 'पाताली खंड रामायण' भी मिलता है । इस कृति में राम की भक्ति महिमा का कथा-प्रसंग के साथ वर्णित है । पंचानन कृत 'पातालिकाण्ड रामायण' २७४ पदों की रचना है । इस कृति पर अद्भुत रामायण का प्रभाव दिखाई देता है । कवि कृष्ण भक्त होते हुए भी राम काव्य का रचना किया है । गंगाराम दास का 'सीता-वनवास', कुल ४०८ छंदों की रचना हैं । यह एक भक्ति काव्य है । कवि कृष्ण को विष्णु से अभिन्न मानते हैं । यह कृति खंड काव्य के रूप में स्वीकृत है । धनंजय कृत 'गणक चरित्र' कुल १४६ छंदों की लघु रचना है । इसका अन्य नाम 'मंदोदरीर मणि हरण' भी है । काव्यशास्त्र की दृष्टि से इसे एकार्थ काव्य कहा जा सकता है । इसमें हनुमान गणक (ज्योतिषी) के वेष में लंका जाते हैं इससे संबंधित कथानक कल्पना प्रस्तुत हैं । कृतिवास पण्डित द्वारा रचित 'अंगद रायवर', अठारहवीं शताब्दी की एकार्थ काव्य की श्रेणी की रचना है । इसमें अंगद के राम दूत के रूप में रावण की राम सभा में जाने और उसके किए गये कार्यों का वर्णन किया गया है । कथा की दृष्टि से यह मौलिक कृति है । भावदेव विप्र कृत 'नागाक्ष युद्ध' अठारहवीं शताब्दी की रचना है । इसमें राम के अश्वमेध यज्ञ के लिए अश्व की प्राप्ति एवं नागाक्ष और हनुमान का युद्ध वर्णन है । भवानीदास का 'रामाश्वमेध', कुल ६७८ पदों में पूर्ण हुआ है । यह कृति दुर्गावर की गीति रामायण से प्रभावित है। किन्तु कथा वस्तु एवं भाव निर्वहण के दृष्टि से गंगादास के 'सीता वनवास' की शैली की है । भोलानाथ दास कृत 'सीताहरण', १८८८ ई. में पूर्ण हुई है । यह एक लघु सफल खंड काव्य है । रचना शैली की दृष्टि से यह वर्णन प्रधान है । दुर्गाप्रसाद शर्माफूकन के 'लवण-वध', कुल ९३ छंदों की लघु रचना है । इसमें मूल कथा लवण वध की है । किन्तु प्रासंगिक कथा के रूप में लव-कुश प्रसंग भी वर्णित है । तीर्थनाथ गोस्वामी ने रामकथा के विभिन्न प्रसंगों के आधार पर कुछ लघु

अख्यान काव्य रचे हैं - 'रामवनवास', 'बालिवध', 'लवकुशर युद्ध', और 'लवण दैत्य-वध' । ये रचनाएँ लघु आकार की हैं और इनमें प्रसंग शीर्षक से स्पष्ट होते हैं। ज्योतिप्रसाद अगरवाला कृत 'ज्योति रामायण' अधूरी रचना है । इसमें आदि काण्ड की रामकथा वर्णित है । इसमें ३२८ पद प्राप्त होते हैं । यह संक्षिप्त होने के बावजूद एक महत्वपूर्ण कृति है । ये असमिया रामकाव्य की प्रसिद्ध कृतियां हैं । यहाँ गौरतलब है कि बहुत से असमिया विद्वानों ने संस्कृत और हिन्दी भाषाओं से रामकाव्यों का असमिया में अनुवाद कर रामकाव्य को समृद्ध किया है । विस्तार भय से यहाँ अनूदित कृतियों का उल्लेख नहीं किया गया । इस तरह यह स्पष्ट है कि असमिया राम काव्य की पन्द्रहवीं शताब्दी से बीसवीं शताब्दी तक की यात्रा काफी महत्वपूर्ण है ।

हिन्दी रामकाव्य :

हिन्दी साहित्य के आदि काल में रामानन्द ने उत्तर भारत में जन साधारण की भाषा में राम भक्ति का प्रचार किया । जिसके परिणाम स्वरूप हिन्दी रामकाव्य भक्ति भावना से ओत-प्रोत है । रामानन्द के कुछ पद और 'रामरक्षा स्त्रोत' का उल्लेख मिलता है । स्वामी रामानन्द ने भक्ति के क्षेत्र में अनेक क्रान्तिकारी परिवर्तन करके जिस प्रकार परम्परा का परिवर्तन किया उसके आधार पर हिन्दी रामकाव्य का आरम्भ उनसे माना जाता है । वैसे हिन्दी आदिकालीन साहित्य में मंगलाचरण और स्तुति के रूप में कहीं-कहीं रामकथा के कुछ प्रसंग मिलते हैं । 'पृथ्वीराजरासों' के द्वितीय समय में दशावतार के अन्तर्गत रामकथा विषयक लगभग १०० छंद मिलते हैं जिनमें लंका युद्ध प्रसंग प्रमुख है । इसके बाद विष्णुदास की 'रामायन कथा' (१४४२ ई.) इस परम्परा की उल्लेखनीय कृति है । इसमें कवि ने कुल

तीन काण्डों - (बाल, सुन्दर और उत्तर काण्ड) के ३४१० छन्दों में वाल्मीकि रामायण के आधार पर पूरी रामकथा को वर्णित किया गया है । इसकी भाषा बुन्देलखंडी (ग्वालियरी) है । इसकी कथा वाल्मीकी रामायण पर आधारित है किन्तु यह अनुवाद नहीं है । कुछ प्रसंगों के लिए कवि 'अध्यात्म रामायण' एवं 'दशावतार चरित' (क्षेमेन्द्र) से भी प्रभावित है । इस रामायण को हिन्दी की प्रथम रामायण माना जाता है । इसके पश्चात सूरजदास की कृति 'रामजन्म' (१४७० ई. के लगभग) उल्लेखनीय है । इसमें बालकाण्ड का रामजन्म प्रसंग वर्णित है । इस कृति से तुलसी दास के रामचरित मानस का बालकाण्ड प्रभावित है । इस कृति में कुल ९२ दोहे और चौपाई की ७१२ अर्द्धालियाँ हैं । इसके भाषा अवधी है । हिन्दी राम काव्य की यह महत्वपूर्ण कड़ी मानी जाती है । अग्रदास की मुख्य रचना 'अष्टयाम' अथवा 'रामाष्टयाम' प्रमुख रचना है जिसमें सीता बल्लभ राम की दैनिक लीलाओं का चित्रण है । ईश्वरदास की राम सम्बन्धित रचना 'अंगद पैज' और 'भरत मिलाप' है । अंगद पैज में अंगद का प्रसंग वर्णित है । भरत मिलाप में अध्योध्या काण्ड की कथा वस्तु अवधी में दोहा चौपाई छंदों में वर्णित है । इसमें भरत को दास्य भक्त के रूप में चित्रित किया गया है । सूरदास द्वारा रचित 'सूरसागर' में भी रामचरित के कुछ प्रसंग वर्णित हैं । तुलसी के पूर्व अन्य राम काव्यकारों में मुनिलाल का 'राम प्रकाश' (१५८५ ई.), आचार्य केशवदास की 'रामचन्द्रिका' (१६०१ ई.) प्रबंध काव्य के दृष्टि से उल्लेखनीय है । सोढ़ी मेहरवान की आदि रामायण अधिकांश गद्यात्मक है और उसकी भाषा हिन्दी मिश्रित पंजाबी है । प्राण चन्द्र चौहान का 'रामायण महानाटक' (१६१० ई.) वाल्मीकी रामायण के आधार पर कथोपकथन शैली में रचित राम कथा है।

हृदय राम का 'हनुमन्नाटक' (१६२३ ई.) ब्रज पद्य की मौलिक रचना है । लालदास का 'अवध विलास' सेनापति कृत 'कवित्त रत्नाकर' राम कथा से संबंधित रचनाएँ हैं । नाभा दास तुलसी के समकालीन है । इनके द्वारा रचित 'अष्टयाम' रामचरित के पद मिलते हैं जिसकी मूल संवेदना श्रृंगार भक्ति है । इस परम्परा में प्रतिनिधि कवि गोस्वामी तुलसीदास (१५८९-१६८० वि.स.) है और उनकी कृति 'रामचरितमानस' है । उनकी अन्य रचनाएं हैं– 'विनयपत्रिका', 'दोहावली', 'कवितावली', 'रामाज्ञा प्रश्नावली', 'रामललानहछू', 'जानकी मंगल', 'बरवै-रामायण' आदि । रामचरितमानस में मर्यादा पुरूषोत्तम राम के चरित्र को सात काण्डों में वर्णित किया गया है । इसमें परिवार, समाज के हर वर्ग के लोगों के लिए मर्यादा का चित्रण हुआ है । यह कृति पूरे उत्तर भारत में लोगों की कंठाहार है । हर अवसर पर इसका पाठ किया जाता है । तुलसीदास के पश्चात नाभादास का नाम उल्लेखनीय है जिन्होंने भक्तमाल परम्परा का सूत्रपात किया । उनकी 'भक्तमाल', अष्टयाम' रामभक्ति की कृतियाँ हैं । रामकाव्य परम्परा में केशवदास की 'रामचन्द्रिका' उल्लेखनीय कृति है । सेनापति के 'कवित्त रत्नाकर' में रामायण के कई प्रसंगों का वर्णन मिलता है । इस परम्परा के अन्य राम काव्यों में नरहरि कृत 'पौरुषेय रामायण', लालदास का 'अवधविलास', कपूरचन्द त्रिखा द्वारा गुरुमुखी लिपि में लिखित 'रामायण' उल्लेखनीय है ।

रामकाव्य की परम्परा रीतिकाल और आधुनिक काल में भी अक्षुण्ण रही । रीतिकाल में रामाख्यानक काव्यों में भूपति की 'राम चरित रामायण' (१७वीं सदी उत्तरार्द्ध) में दोहा चौपाई में राम कथा वर्णित है । गुरु गोविन्द सिंह की १६९८ ई. की रचना रामावतार कथा 'गोविन्द रामायण' के नाम से प्रकाशित है । जानकी शरण कृत 'अवध सागर', सुखदेव मिश्र का 'दशरथ राय', झामदास की 'श्रीरामायण', पदमाकर कृत 'रामरसायन', महाराज विश्वनाथ सिंह कृत 'रामस्वयंवर', महंत रामचरण दास कृत 'कवितावली रामायण' और 'रामचरित', जीवाराम कृत 'अष्टयाम' आदि इस काल के रामकाव्यों में उल्लेखनीय हैं ।

आधुनिक राम साहित्य का यह वैशिष्ट्य है कि राम कथा विषयक गद्य की तुलना में राम काव्य अधिक महत्वपूर्ण है । आधुनिक युग में रामचरित उपाध्याय की 'रामचरित चिन्तामणि', (१९२० ई.), मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित 'साकेत' (१९२९ ई.) एवं 'पंचवटी', रामनाथ ज्योतिषी कृत 'श्रीरामचन्द्रोदय, अयोध्या सिंह उपाध्याय की 'वैदेही वनवास' ('१९३९ ई.) बलदेव प्रसाद मिश्र कृत 'साकेत सन्त', (१९४६ ई.) सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला की 'राम की शक्ति पूजा', (१९४९ ई.) केदार नाथ मिश्र 'प्रभात' की कैकेयी (१९५० ई.) बालकृष्ण नवीन की 'उर्म्मिला' (१९५७ ई.) आदि रचनाएँ उल्लेख्य हैं।

असमिया और हिन्दी रामकाव्य की परम्परा देखकर यह सहज अनुमेय है कि दोनों भाषाएं रामकाव्य की दृष्टि से समृद्ध हैं । असमिया भाषा में रामकाव्य चौदहवीं शताब्दी में लिखा जाने लगा और हिन्दी में भी लगभग इसी समय स्वामी रामानन्द की प्रेरणा से रामकाव्य की रचना का प्रारम्भ हुआ । यदि दोनों भाषाओं के राम-काव्यों का ब्यौरेवार तुलनात्मक अध्ययन किया जाय तो दोनों भाषाओं के क्षेत्रों की परम्परागत एकता को सुदृढ़ करने में पर्याप्त सहायता अवश्य मिलेगी ।

यह सुखद आश्चर्य है कि हिन्दी के विद्वानों का अन्य भारतीय भाषाओं के प्रति रुझान बढ़ रही है और इसी तरह हिन्दीतर भाषी विद्वान हिन्दी साहित्य की ओर आकृष्ट हो रहे हैं । भारतीय

भाषाओं के बीच सम्बन्ध प्रगाढ़ करने की दिशा में अनुवाद और तुलनात्मक अध्ययन के महत्त्व को हमें स्वीकार करना होगा। भारतीय साहित्य में प्राप्त भावात्मक एकता के पोषण के लिए यदि हम यह कार्य कर सकें तो आगामी पीढ़ी के लिए हम प्रेम और श्रद्धा के पात्र बन सकेंगे। अन्त में मैं महापुरुष शंकरदेव की एक पंक्ति का उल्लेख करना चाहूँगा जिसमें उन्होंने केवल भारतवर्ष का उल्लेख करके देश की अखण्डता के महत्त्व को प्रतिपादित किया है -

धन्य धन्य कलिकाल, धन्य नर तनु भाल।
धन्य धन्य भारतबरिषे।

आधार ग्रंथ :

१. द्विवेदी हजारी प्रसाद, हिन्दी साहित्य का आदिकाल, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, १९९४ ई.।

२. मागध कृष्णनारायण प्रसाद, असम प्रान्तीय राम साहित्य - हिन्दी विकास पीठ मेरठ, १९८५ ई.।

२. नगेन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, १९७३ ई.।

३. चौबे दिनेश कुमार, हिन्दी और असमिया की प्रथम रामायण, संजय बुक सेंटर वाराणसी, २००१ ई.।

४. चौबे दिनेश कुमार, मानस एवं कंदली रामायण का कथा-शिल्प, राका प्रकाशन इलाहाबाद, २००० ई.।

५. मंहत चित्र, असमिया साहित्य का इतिहास, असम हिन्दी प्रकाशन, गुवाहाटी, २००५ ई.।

६. शर्मा सत्येन्द्र नाथ - रामायनर इतिवृत्त, डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय, डिब्रूगढ़, १९९४ई.

रीडर
हिन्दी विभाग
पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय
शिलांग - २२